माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 14 जनवरी 2016 को राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में आयोजित इंडियन सोसायटी ऑफ वेटनरी फार्माकोलॉजी एंड टॉक्सीकालॉजी के 15वें अधिवेशन में दिया गया भाषण।

Dr. Gurubachan Singh, Chairman, Agriculture Scientist's rectruitment board; Prof. A.K. Srivastava, President ISVPT and Director-Vice Chancellor of this prestigious Institute NDRI Karnal; Dr. A.M. Thaukar, Executive Secretary; Dr. A.N. Gopal Kumar, Secretary General; Dr. S.K. Bhau Financial Secretary ISVPT, Organization Secretary of this seminar Dr. Bhim Singh, देश भर से आए हुए महानुभाव, faculty members, media persons and dear students.

उद्घाटनकर्ता का प्रमुख काम उद्घाटन की घोषणा करना होता है, जो मुझे करना है। लेकिन फिर भी जब मैं बैठा था तो Dr. A.K. Srivastava और Dr. Gurubachan Singh कह रहे थे कि हम कम बोल रहे हैं इसलिए कि आप ज्यादा बोलें। सबसे पहले मैं National Dairy Research Institute के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करना चाहता हूँ। अपने क्षेत्र में यह संस्था विश्व की एक सर्वमान्य संस्था है। अभी हम इसका गीत गा रहे थे– 'ये है हमारा प्यारा राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान।' वास्तव में यह हमारा भी है और प्यारा भी है। गवर्नर के नाते तो मुझे प्यारा इसलिए भी है कि यह बैंगलोर से उठकर हरियाणा में आ गया।

हरियाणा प्रदेश कई बातों के लिए नम्बर एक पर है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी और देश की रक्षा करने की दृष्टि से भी। हम जानते हैं कि सेना का पहला सेनापति भी यहीं का था और वर्तमान सेनापति भी यहीं का है। पहला रेवाड़ी का था, इस बार झज्जर का है। स्पोर्टस में भी हरियाणा पीछे नहीं है, नम्बर एक पर है। और भी अच्छा यह है कि लड़के ही नम्बर एक पर नहीं हैं लड़कियाँ भी नम्बर एक पर हैं। कन्याओं के प्रतिशत में हरियाणा जरूर पीछे है, उसमें भी हम प्रगति कर रहे हैं। लेकिन जहाँ तक Women Empowerment का सवाल है हरियाणा फिर नम्बर एक पर हैं।

इस संस्थान में जिस महत्वपूर्ण विषय की हम चर्चा करेगें, जिसका आज उदघाटन हो रहा है, उस दृष्टि से भी हरियाणा नम्बर एक पर है। राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। इसलिए मैं इसे अपनी शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ और पूर्ण मनोयोग से, अन्तःकरण से भरपूर प्रशंसा भी करना चाहता हूँ। जैसे यह संस्थान हमारा प्यारा है वैसे ही Dr. A.K. Srivastava भी हमारे बहुत प्यारे हैं।

आप तीन दिन तक एक ऐसे विषय पर बात करेगें जो जन सामान्य के लिए बहुत कठिन है। मैने भी जब आज इस सेमिनार का थीम पढ़ा Nutritional Pharmacology and toxicology तो मैं भी ऊपर–नीचे देखता रहा। क्या बोलूं इस पर? बोलने के लिए मैं

लाया था, लेकिन वह सब अंग्रेजी में है क्योंकि हिन्दी में इसको बोला ही नहीं जा सकता। Very difficult to speak in Hindi on the topic.

लेकिन हमारे यहाँ पर पहले जो कुछ भी बोला गया है उद्घाटन सत्र में जितना होना चाहिए उससे ज्यादा है और आपके तीन दिन की चर्चा के लिए एक दिशा है। यहाँ की चर्चा का प्रारंभ और यहाँ का माहौल और आप सबको देखकर मुझे लगता है कि आप इस विषय के ऊपर तीन दिन के अंदर एकदम न्याय करेंगे जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत उपयोगी होगा।

मैं इस अवसर पर आपका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि भारत के लिए 21st century is very important. यह 21वीं शताब्दी जिसमें से हम जा रहे हैं, यह भारतवर्ष के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कई बार तो मुझे ऐसा लगता है कि 21वीं शताब्दी सिर्फ भारतवर्ष के लिए महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है। विश्व जिस परिस्थिति में से जा रहा है, जिस संकट से गुजर रहा है, इससे मुक्ति पाने के लिए, इसका समाधान ढूँढने के लिए, विश्व के जितने विचार और साधन और मान्यताएँ हैं वे सारे फेल हो गए हैं। हम कोई कारगर साधन और उपाय नहीं ढूँढ पा रहे। पूरे विश्व में शान्ति रहे, सुख रहे, मनुष्य अपना जीवन ठीक तरह से जी सके उसके लिए कैसा Mental setup होना चाहिए, कैसी व्यक्ति की मानसिकता होनी चाहिए? क्योंकि इसको ठीक भी आदमी ही कर सकता है। और ये ठीक नहीं हो रही है, इस तरह की परिस्थिति का निर्माण किसने किया? वह भी आदमी ने ही किया। यानि विश्व की जो संकटपूर्ण अवस्था है वह भी आदमी ने ही निर्मित की है और उसको दूर भी आदमी ही कर सकता है। लेकिन जो दूर कर सकता है उसी ने निर्माण क्यों किया? क्योंकि उसका विचार ठीक नहीं है। उसकी मानसिकता ठीक नहीं है, उसका रास्ता ठीक नहीं है, उसकी सोच ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने तो यह विचार बहुत पहले से दिया है कि आप विश्व में अगर सुख चाहते हो, ठीक से जीना चाहते हो, सुख और शान्ति चाहते हो तो आप जीवन कैसे जीओगे? आप कैसे व्यवहार करोगे? आप किस विचार का अपनाओगे ? अगर मैं संस्कृत के एक श्लोक की ओर आपका ध्यान खींचू–'अयं निजं परोवेति, गणना लघुचेतसाम, उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम।' यह विचार यह संकेत करता है कि अगर आप संसार के अंदर, संपूर्ण पृथ्वी पर मानव जीवन को सुख शान्ति से जीना चाहते हो तो फिर इस विचार को अपनाओ। यह मेरा है, वह तेरा है। यह मेरा–तेरा का विचार कौन करता है? और जो कुछ भी है वह मेरा ही है यह विचार कौन करता है? लघुचेतसाम– जिसका विचार लघु है, जिसका विचार छोटा है, जिसका विचार संकीर्ण है, जो स्वार्थी है वह यह विचार करता है। जिसका चरित्र उदार है, जिसका मस्तिष्क उदार है, जिसका ठीक से विकास हुआ है और जो सच्चे अर्थों में इन्सान है, वह है उदारचरितानाम, जिसकी चरित्र उदार है। वसुधैव कुटुम्बकम–उसके लिए तो पूरी पृथ्वी कुटुम्ब है। पृथ्वी ही उसका परिवार है। मेरा–तेरा का प्रश्न उसे आता ही नहीं। इस एक ही विचार की अगर हम कल्पना करें तो इस एक ही विचार के आने से पृथ्वी पर क्या होगा? स्वर्ग

घूमने के लिए आपको कहीं जाना नहीं पड़ेगा। जहाँ आप रह रहे हैं वहीं आपको स्वर्ग मिल जाएगा। यह बात मैं इस संदर्भ में कह रहा था कि यह विचार सिर्फ भारत का है और यह विचार 21वीं शताब्दी में बहुत जरूरी है।

व्यावहारिक धरातल पर मैं आपको ले जाऊँ तो जैसे ही इस बार सरकार बनी, देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी बने तो लाल किले से उनका भाषण हुआ। वे बोले कि अपने देश के अंदर एक विचार है, अपने देश के अंदर एक मानसिकता है, अपने देश के अंदर एक सोच है। हर काम करने वाला व्यक्ति यह सोचता है कि मैं जो काम कर रहा हूँ उसमे मेरा क्या है? कोई भी प्रोजैक्ट आता है, कोई भी काम आता है, कोई भी assignment आता है, कोई भी काम आप करते हैं तो काम कैसे अच्छा होगा, काम कैसे उत्कृष्ट होगा, जिस उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं वह पूरा होगा? मनुष्य के कल्याण के लिए होगा? ठीक समय के अंदर पूरा होगा? अच्छा होगा? इसको सोचने के बजाय आप सोचते हैं कि इस काम के अंदर मेरा क्या है? What is my share in this project? What I have to get in this assignment? और फिर बाद में जब पता लगता है कि आपका कुछ नहीं तो आप क्या कहते हैं? आपके दिमाग में क्या विचार आता है? मुझे क्या है? जाए भाड़ में। अगर मेरा उसमें कुछ है ही नहीं तो मुझे क्या करना है। आज हम इस विचार से ओतप्रोत हैं।

पूरी सरकारी मशीनरी में या जितने भी NGO's हैं, जो सरकार के लिए काम करते हैं और भी जो अन्य संस्थान हैं जो समाज के कल्याण के लिए काम करते हैं वे इस विचार को त्यागकर यह सोचें कि मुझे जिस उद्देश्य के लिए यह काम दिया गया है उसे पूरा करना है, अच्छा करना है, उत्कृष्ट करना है। मुझे क्या मिलेगा इससे मेरा कोई मतलब नहीं है, मुझे इस काम को पूरा करने में ही संतुष्टि है। यह विचार अगर आ जाए तो समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाएगा। तब आपको भ्रष्टाचार के लिए कानून नहीं बनाना पड़ेगा। मेरा–तेरा का भाव आपके मन में ही नहीं आएगा।

यह विचार भारत के लिए ही उपयोगी हो, ऐसा नहीं है। यह पूरे विश्व के लिए उपयोगी है। प्रधानमंत्री जब संयुक्त राष्ट्र संघ में जाकर अपना पहला भाषण करते हैं कि देश इस समय आतंकवाद की चपेट में है, विश्व हिंसा की चपेट में है और वह बढ़ता ही चला जा रहा है। यह Internal Terrorism भी है और External Terrorism भी। भारत का विचार करें तो 17 स्टेट ऐसे हैं जो Internal Terrorism से प्रभावित हैं। इसको आप कैसे मिटाओगे?

पहला विश्व युद्ध हुआ League of Nations बना। वह सफल हुआ क्या? दूसरा विश्व युद्ध हुआ United Nations Organization बना। क्या परिणाम निकला? इसका हल फिर भी नहीं हुआ, कहीं पर शान्ति स्थापित नहीं हुई, भाईचारा स्थापित नहीं हुआ, सार्वभौमिकता की रक्षा नहीं हुई। वह तब तक नहीं हो सकती जब तक आदमी अपनी सोच नहीं बदलेगा। अपना Mental setup नहीं बदलेगा। मानसिकता नहीं बदलेगा। उसको बदलने के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में कहा

कि भारत के विचार की तरफ जाइए। हर व्यक्ति को योग की शिक्षा दीजिए। उसको संयमित एवं नियमित कीजिए। उसकी इच्छाओं पर नियंत्रण कीजिए। यह अगर आप करते हैं तो देखना सोच में तुरंत परिवर्तन आएगा। यह व्यक्ति को प्रेरणा देता है।

पाकिस्तान के बारे में विचार कीजिए। पाकिस्तान का attitude आगे क्या होगा यह तो पता नहीं लेकिन नवाज शरीफ जी को फोन करके वे तुरंत वहाँ चले गए। उनके घर पर चले गए। उनका जन्मदिन था। नाती की सगाई की रस्म थी। उसका कैसा परिणाम हुआ? जो आतंकवादी आज से 16 वर्ष पहले कंधार में मजबूरी के कारण छोड़ना पड़ा था वह तब के बाद यही काम करता रहा। लेकिन अभी जो पठानकोट एयरबेस में हमला हुआ उसकी खबर आई कि पाकिस्तान ने उसे गिरफ्तार कर लिया। यह change क्यों आया? आगे क्या होगा यह मैं नहीं कहता। लेकिन यह बदलाव attitude के कारण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जाकर जो कुछ किया उसके कारण है।

मैं कह रहा था कि भारतवर्ष के इस विचार की 21वीं शताब्दी में जरूरत है। लेकिन सिर्फ विचार से काम नहीं होगा। विचार अच्छा हो सकता है लेकिन विचार को लोग तब मानते हैं जब आपके पास ताकत हो। बिना ताकत के विचार को कोई नहीं मानता। इसलिए भारत के सिर्फ विचार से काम नहीं चलेगा। विश्व में सुख और शान्ति स्थापित करने का भारत के पास विचार है। लेकिन भारत को सबसे पहली आवश्यकता समर्थता की है। भारतवर्ष समर्थ होना चाहिए। किसी राष्ट्र को मजबूत बनाने के जितने भी factors की जरूरत होती है उन सबमें राष्ट्र नम्बर एक पर आना चाहिए। समर्थवाद– इसकी जरूरत है। 21वीं शताब्दी में इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। खाद्यान्न के क्षेत्र में देश समर्थ चाहिए। सेना के क्षेत्र में देश समर्थ चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में समर्थ चाहिए। औद्योगिक दृष्टि से समर्थ चाहिए। इसलिए Make in India का जो नारा दिया है वह इसी बात को प्रकट करता है कि हम भारतवर्ष को खड़ा करें। देश की आवश्यकताओं की पूर्ति भारतवर्ष के द्वारा करें। क्योंकि यहाँ पर सब कुछ है।

नई सरकार बनने के बाद राष्ट्रपति महोदय का जो भाषण था उसमें 3D की चर्चा थी। भारतवर्ष के लिए 3D की चर्चा थी। 3D का पहला D था–democracy. 20वीं शताब्दी, 21वीं शताब्दी या आगे भी हम विचार करेंगें तो सबसे अच्छी शासन प्रणाली कोई हो सकती थी है तो वह democracy है। जनता का राज। भारतवर्ष एक सुंदर एवं स्वच्छ, स्वस्थ democracy का उदाहरण है। जो भारतवर्ष को democracy मिली है उसमें पाँच वर्ष के बाद चुनाव होते हैं और तख्ता पलट जाता है, बड़ी शान्ति से पलट जाता है। हर चीज जनता के विचार–विमर्श से होती है। यहाँ किसी की मनमानी नहीं चलती। इसलिए भारतवर्ष के पास democracy है। Democracy के साथ–साथ भारतवर्ष के पास लगभग 67% young population है। यह demography है। यह दूसरा फैक्टर है जो भारतवर्ष के लिए उपयोगी है। और तीसरा भारतवर्ष में demand है। इसलिए जो 3D की बात उन्होंने कही थी हमारी democracy, demography और हमारी demand इन तीनों का उपयोग करते हुए भारतवर्ष का विकास कीजिए, development

कीजिए। यह चौथा D है जो मैं अपनी तरफ ये जोड़ रहा हूँ। यह अगर आप हर क्षेत्र में करते हैं तब फिर समर्थ भारत बनेगा। आप जरा इस संदर्भ में देखिए कि जिस विषय पर आप चर्चा करेंगे वह भारत को समर्थ बनाने के लिए कितना कारगर है, कितना effective है, कितना practical है, कितना useful है और कितना उपयोगी है।

भारतवर्ष की तो विशेषता है कि जितना प्यार हम आदमी से करते हैं उतना ही प्यार हम जानवर से करते हैं। यह भारतवर्ष की विशेषता है। क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। भगवान ने जब सृष्टि की रचना की तो सिर्फ आदमी को नहीं बनाया। इस आदमी को जिन–जिन चीजों की जरूरत है उन सबको बनाया। यह आदमी खुद निक्कमा है जो उसका उपयोग नहीं समझ पा रहा। वह अपने आपमें ही व्यस्त है, अपने आपमें ही लीन है, अपने आप की सोचता है। वह अपने से बाहर सोचता ही नहीं कि सृष्टि में क्या–क्या है और वह उसके लिए कैसे पूरक है, कैसे पोषक है। कैसे congenial है। भारतवर्ष की तो यह विशेषता है।

मैं जब कॉलेज में पढ़ता था तो उसमें एक पुस्तक थी जिसके अंदर एक बहुत अच्छी कथा थी। "Yudhister and his faithful dog." शायद आपने भी वह पढ़ी होगी। "Yudhister and his faithful dog." Dog तो animal है। युधिष्ठिर आदमियों मे श्रेष्ठ है। लेकिन वह कथा इस तरह की है कि जब महाभारत काल में युधिष्ठिर सहित पाँचों भाई द्रौपदी को लेकर अपनी अंतिम यात्रा पर चले तो हिमालय की तरफ चले। वह चूंकि उनकी अंतिम यात्रा थी तो उस यात्रा के अंदर एक–एक करके सब गिरते जा रहे थे, मुर्छित होते जा रहे थे। सबसे पहले द्रौपदी, फिर नकुल, फिर सहदेव, फिर अर्जुन, फिर भीम एक–एक करके गिरते गए और फिर अंत में Yudhister and his faithful dog दोंनो रह गए। यह बहुत मार्मिक कथा है।

जब युधिष्ठिर और उसका faithful dog रह गया और युधिष्ठिर ने आगे की तरफ देखा तो एक विमान आया। उसमें एक व्यक्ति बैठा हुआ था। उसने आकर युधिष्ठिर से कहा कि श्रीमान यह विमान आपके लिए आया है, आप इसमें बैठिए। युधिष्ठिर ने कहा मेरे लिए आया है? द्रौपदी और मेरे चार भाई कहाँ हैं? उनको बुलाओ। उनको आने दो तब हम जाएँगे। उसने कहा वे सब पहले ही पहुँच गए। जहाँ हम आपको ले जा रहे हैं वहाँ वे पहले ही पहुँच चुके हैं। वे मूर्छित होते गए, मरते गए और वहाँ पहले ही पहुँच गए। यह सूचना पाकर युधिष्ठिर ने कहा–ठीक है फिर हमारा dog? यह है विचार, मानसिकता। तब जो विमान के अंदर बैठा था उसने कहा कि यह विमान आपके लिए है, कुत्ते के लिए नहीं है। dog के लिए नहीं है। उस समय युधिष्ठिर क्या सोचते हैं और आजकल आदमी क्या सोचता है? आजकल तो आदमी इतना होशियार हो गया है कि वृद्ध होने पर माता–पिता को भी वृद्धाश्रम में छोड़ आता है। घर में नहीं रखता है। ये वृद्धाश्रम क्यों बनाने पड़ रहे हैं ? अगर एक पिता के चार भाई हैं तो वे साथ–साथ नहीं रह सकते। अब तो ऐसा भी हो रहा है कि कुछ समय के बाद पति–पत्नी भी साथ नहीं रहना चाहते। वे कहते हैं बहुत समय हो गया I am not happy with you. Let's

divorce. आज यह विचार और मानसिकता है। कितना फर्क आया है। अगर यही विचार रहेगा तो क्या आप स्वस्थ भारत बनाएँगे?

लेकिन युधिष्ठिर ने उससे कहा कि नहीं बिना dog के हम नहीं जाएँगे। जैसे ही युधिष्ठिर ने बड़े दृढ़तापूर्वक संकल्प के साथ उससे यह कहा कि मैं अकेला नहीं जाउँगा, अगर जाउँगा तो अपने dog के साथ जाउँगा तो अजीब घटना घटी। युधिष्ठिर ने सामने देखा तो विमान पर कोई नहीं था। सिर्फ खाली विमान था। इस चमत्कारिक घटना के बाद जब युधिष्ठिर ने पीछे देखा तो वहाँ पर dog नहीं था। dog के स्थान पर खुद धर्मराज खड़े थे। उन्होंने कहा युधिष्ठिर मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था, बैठिए। कुत्ता बनकर खुद धर्मराज उनके पीछे चल रहे थे और अंत में आकर युधिष्ठिर की परीक्षा ली कि यह वास्तव में धर्मराज है कि नहीं?

तो भारतवर्ष का यह विचार है कि यहाँ युधिष्ठिर में और dog में कोई फर्क नहीं। we are all equal. और जब dog और युधिष्ठिर में कोई फर्क नहीं है तो फिर इंसान इंसान में कैसे फर्क हो सकता है। क्या यह विचार सिर्फ कोरी कल्पना है? क्या यह विचार सार्थक नहीं है? क्या 21वीं शताब्दी में यह विचार मान्यता के योग्य नहीं है? जरा इस विचार को अपनाकर के तो देखिए। जो सुख आपको पैसा नहीं दे सकता वह सुख यह विचार आपको देगा। जरा इसे अपनाकर देखिए। आप जब इसको अपनाएँगे तब भारत समर्थ होगा। इसलिए मैं कह रहा था कि भारत हर दृष्टि से समर्थ हो। विचार की दृष्टि से हो जाए लेकिन जब तक समर्थ नहीं होगा, जब तक ताकत नहीं होगी, तब तक भारत 21वीं शताब्दी में जगत सिरमौर नहीं बन सकता। He can't lead the world. He can't be the hero of the world. He can't be the leader of the world. यह मैं नहीं कह रहा यह तो अब सब कहते हैं। यह 21वीं शताब्दी भारत किस की है। यह सब कहते हैं।

अगर 21वीं शताब्दी भारत की है तो इस विचार को हमें अपनाना है। भारतवर्ष को समर्थ बनाना है। भारतवर्ष को स्वावलंबी बनाना है। इसलिए भारतवर्ष हमको समर्थ चाहिए। भारत हमको स्वस्थ चाहिए। भारतवर्ष हमको स्वच्छ चाहिए। भारतवर्ष हमको समृद्ध चाहिए और भारतवर्ष हमको सहिष्णु चाहिए। ये पाँच विशेषण चाहिएं। समर्थ, स्वस्थ, स्वच्छ, सहिष्णु और समृद्ध। ये पाँचों की पाँचों चीजें जो मैं बोल रहा हूँ वे भारतवर्ष के लिए नई नहीं हैं। भारतवर्ष के पास ये पहले ही प्राप्त थीं। आज भारतवर्ष को और भारतवर्ष की संस्कृति को कोई असहिष्णु कहे यह कितनी गलत बात है। आप कोई ऐसा देश तो बता दो जिस पर भारतवर्ष ने जबसे जन्म लिया है तबसे आक्रमण किया हो? किसी देश को जीतने की कोशिश की हो? भारतवर्ष ने विचार से सबको जीता है। विश्व में कोई राष्ट्र आपको ऐसा नहीं मिलेगा जहाँ भारतवर्ष का ideologically, culturally, spiritually contribution नहीं है। You will not find any country in the world.

बौद्ध धर्म कहाँ–कहाँ गया? हमारे संन्यासी कहाँ–कहाँ गए? और भारतवर्ष के लोग विश्व में कहाँ–कहाँ गए ? आप देखिए जरा। देश के प्रधानमंत्री विश्व में कितने देशों में जाते हैं और जहाँ कहीं भी जाते हैं आपको पता लगता है कि वहां भारतवर्ष के कितने लोग हैं। वे हजारों में आते हैं। किसी हॉल में कार्यक्रम होता है तो जितने अंदर होते हैं उतने ही बाहर होते हैं। भारत ने यह सब कुछ किया है। लेकिन भारतवर्ष ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। कभी किसी को परास्त नहीं किया। अगर भगवान राम ने लंका भी जीती तो विभीषण को सौंप दी। इंदिरा गाँधी ने अगर पाकिस्तान के समय युद्ध लड़ा तो बांग्ला देश को शेख मुजीबर रहमान को सौंप दिया। वे चाहतीं तो खुद भारतवर्ष उसको अपना सकता था, राज कर सकता था। लेकिन नहीं। भारतवर्ष की तो यही संस्कृति है। इसलिए 21वीं शताब्दी में भारतवर्ष में ये सारी की सारी चीजें चाहिएं।

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की अगर आप बात करेंगे तो देश तीन बातों के लिए जाना जाता है। वे तीनों बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे तीनों ग से शुरू होती हैं। 3G. ग से गीता। गीता एक ऐसी पुस्तक है जो जीवन–'पद्धति बताती है, आदमी की आदमी से पहचान करवाती है। जन्म लेना मनुष्य को मनुष्य नहीं बनाता। मनुष्य के नाते व्यवहार करना यह मनुष्य बनाता है। मनुष्य के नाते व्यवहार कौन सा है यह गीता में लिखा है। मनुष्य के रूप में पैदा होना मनुष्य नहीं है। मनुष्य के रूप में पैदा होकर वैसा आचरण करना, वैसा व्यवहार करना तब फिर मनुष्यता है।

दुर्योधन भी आदमी था। युधिष्ठिर भी आदमी था। दोनों में फर्क क्या था? दोनों राजा के पुत्र थे। एक ही परिवार के थे। सब कुछ तो समान था। पढ़ाई–लिखाई भी एक साथ हुई थी। क्या फर्क था? फर्क सिर्फ इतना था कि दुर्योधन का life style देखिए और युधिष्ठिर का life style देखिए। दुर्योधन का life style गीता के प्रतिकूल था और युधिष्ठिर का life style गीता के अनुकुल था। इसलिए मनुष्य का जो यह life style है, जीवन पद्धति है, जो मनुष्य को नर से नारायण बनाती है, इस जीवन–पद्धति का ज्ञान अगर कोई पुस्तक दे सकती है तो वह गीता है।

मैं ज्यादा इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि उन्होंने कहा है कि जल्दी नहीं है। मैं तो अपना अंग्रेजी में भाषण लाया था। आपके Pharmacology and toxicology को पढ़कर के चला जाता। गलती गुरबचन सिंह जी की है। सिर्फ यह गीता और भारत की प्रशंसा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। आप प्रेक्टीकली इसका विचार करके देखो कि नर के रूप में पैदा होना ही पर्याप्त है? नर के रूप में व्यवहार करना पर्याप्त है? करोगे तभी आप नर कहलाओगे। दुर्योधन और युधिष्ठिर में कोई फर्क ही नहीं था। अगर मैं आपमें से किसी से पूछूं कि आप दुर्योधन बनोगे क्या? कोई नहीं कहेगा। और अंतर्मुखी होकर विचार करोगे तो आपका पूरा का पूरा काम दुर्योधन का है। पूरा काम दुर्योधन का है। सुई की नोक के बराबर जमीन नहीं दूंगा। आप तो रेल के डिब्बे में बैठे जाते हैं दूसरा आता है तो उसको कहते है चल यहाँ से, आप उसे नहीं बिठाते। यह हाल है।

इसलिए मैं कह रहा था कि एक ही पुस्तक है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है, जीवन–पद्धति का अहसास कराती है। आप उसके अनुसार व्यवहार अगर करोगे तो फिर आप सच्चे अर्थ में मनुष्य बन जाओगे। अगर कहीं विकार किया, कोई पाप भी किया तो अपने यहाँ एक ऐसी नदी भी है जो विश्व में कहीं भी नहीं है। जो आपके विकार को और पाप को दूर करती है। और वह है गंगा। आप अगर पूरे विश्व की यात्रा करेंगे तो आपको कोई ऐसी नदी नहीं मिलेगी। गीता और फिर गंगा जो मनुष्य को पवित्र बनाती हैं। तीसरी चीज और है जो भारत की पहचान है और वह है गाय। गाय की महत्ता बहुत है। यह आपकी जिंदगी की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और मरने के बाद भवसागर से भी तारती है। इसलिए गंगा भी माँ है, गीता भी माँ है और गाय भी माँ है।

आप भी जिस थीम को लेकर चले हैं, उस थीम के माध्यम से आप human health की चिंता कर रहे हैं, animal health की चिंता कर रहे हैं, इनकी health अगर अच्छी होगी, fertility ठीक होगी तो फिर इसके माध्यम से देश की GDP बढ़ेगी, आर्थिक स्थिति ठीक होगी, देश समृद्ध बनेगा और पूरे विश्व में भारतवर्ष अपनी विजय का डंका बजाएगा और वास्तव में जग सिरमौर बनेगा।

आपका यह 15वाँ सेमिनार है। मुझे लगता है इसके पहले 14 सेमिनार हुए हैं। आप विभिन्न विषयों पर चर्चा करते रहे होंगे। आज का यह विषय जरूर जिस तरह का सपना 21वीं शताब्दी में भारत देखता है उसको पूरा करने में सहयोगी बनेगा। यह सेमिनार ऐतिहासिक होगा। आपके विचार देश को आगे ले जाने में बहुत सार्थक होंगे। इन्हीं शब्दों के साथ आपकी इस तीन दिन की संगोष्ठी का उद्‌घाटन, प्रारंभ करने की मैं घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद।